RAJYA SABHA ,

Friday the Ind December, 1988/ 11*th Agrahaayna,* 1910 *{Saha)*

The House met at eleven of the clock, Mr. Chairman in the Chair.

MEMBER SWORN

Shri Sat Paul Mittal (Nominated).

ORAI, ANSWERS TO QUESTIONS

*301. *[The questioner (Shri Ish Dutt Yadav) was absent. For answer,* vide Col. 32—34 infra]

Supply on rationed items to Fair Price Shops in Delhi

302. SHRI LAXMI NARAIN; will the Minister of FOOD AND CIVIL SUPPLIES be pleased to state

(a) whether it is a fact that the Delhi State Civil Supplies Corporation Limited have failed to maintain the schedule of <he supply of rationed items to the Fair Price Shops in Delhi;

(b) if so, whether the pendency is of more than two weeks;

(c) what are the reasons therefor and the steps Government propose to take *to* regulate the supply; and

(d) whether Government have taken anj' action against the officers responsi ble for the pendency in this regard?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FOOD AND CTVIL SUPPLIES (SHRI D. L. BATTHA): (a) No, Sir. The Delhi State Civil Supplies Corporation has been making regular snp-plies of specified food items *i.e.* wheat, rice and sugar to the fair price shops in Delhi.

(b) to (d) Question does not arise.

श्री लक्ष्मी नारायण : सर, इससे बड़ा मजाक दिल्ली स्टेट सिविल सप्लाईज कारपोरेशन किसी स्टेट के साथ नहीं कर सकता। जो यह जवाब. उन्होंने भेजा है, मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से प्रार्थना करना चाहता हूं कि क्या वे इस बात की इन्क्वायरी करेंगे ? आज भी एक हफ्ते की पेंडेंसी है। क्या इन्क्वायरी के बाद व कंसर्न अधिकारी के विरुद्ध कार्यवाही करने की चेष्टा करेंगे ?

श्री डी० एल० बैठा : महोदय, यह जो सप्लाई दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ से एसेंशियल कामोडिटीज की होती है, उसको इतने व्यापक रूप से और इतनी ज्यादा तादाद में करना पड़ता है कि कभी कभी उसमें देरी हो जाती है। मगर इसका अर्थ यह नहीं है कि यह एकदम फेल्योर हो जाता है। जो देरी होती है वह एक-आध हफ्ते की होती है। ऐसे समय में उनको यह हिदायत है कि दूसरी दुकानों से जहां ज्यादा गल्ला है, उसको ट्रांसफर कर दिया जाय और एक हफ्ते के अंदर, जहां माल नहीं पहुंचा है उसको तुरंत पहुंचाया जाय।

श्री लक्ष्मी नारायण : सर, मंत्री महोदय से मैं यह जानना चाहूंगा कि यह जो देरी होती है, जिस दिन मैंने प्रश्न किया उस दिन तीन हफ्ते की पेंडेंसी थी। क्या मंत्री महोदय यह जानकारी देने की चेष्टा करेंगे और क्या वे इस बात से सहमत होंगे कि यह पेंडेंसी इसलिये हो रही है कि जिस नातजुर्बेकार व्यक्ति को ठेका दिया गया जिसके पास एक भी ट्रक नहीं है जिसके द्वारा वह माल को गोदाम से फेयर प्राइस शाप्स तक भेज सके ?

श्री डी० एल० बैठा : सभापति महोदय, देरी बहुत कारणों से होती है और यह भी जैसा सदस्य महोदय ने बताया वह भी एक कारण हो सकता है। देरी कभी यातायात की कठिनाइयों के कारण भी हो सकती है और कभी कहीं लेबर प्राबलम के कारण भी हो सकती है और कभी अन्य और भी कारणों से होती है। जहां तक यातायात की कठिनाईयों का सवाल है दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन ने व्यवस्था की है और

हम लोगों ने हिदायत दी है कि अधिक से अधिक ट्रक और माल ढोने वाले वाहनों की व्यवस्था कर ताकि इसकी वजह से कहीं कठिनाई न हो, देरी न हो।

MR. CHAIRMAN; Yes, Mr. Kulkarni.

SHRI A. G. KULKARNI: Sir. while replying to my friend, Mr. Laxmi Narain, the honourable Minister has said that he agrees that there is delay in the supply of materials to the fair price shops. You will appreciate that when the material is not available in the fair price Shops the majority of the population of Delhi, particularly the lower-middle class people and the poorer people suffer and the nearby private traders take the benefit out of this and ultimately, the sufferer is the poor ration card-holder who does not get the material. Sir, I stay at a place near Khan Market and in the Khan Market and Pandara Road Market areas I see people complaining regarding exploitation by the traders in the matter of prices and the main reason is the delay in supplies by the Delhi Civil Supplies Department or whatever you may call it. You may say that the truck comes late and that there are some labour disputes, etc. As a consumer, how does it matter to me? It is none of my business to find out these things. It is up to the Government and the Delhi Administration irt this case to do that. I would like to tell you that the conditions of the lower-middle class and the poorer class people are so bad that they are always exploited by the unfair traders because of the delay in the supply of material. This is number one. The second thing is the quality of the material. And, Sir, the third thing is the prices exploited by the traders. What steps are you going to take to protect the consumers, the poor ration cardholders?

SHRI D. L. BATTHA; Sir, we have given instructions that regular supplies in time should be made available to the fair price shops so that the poorer consumers, as he hai said, get their supplies.

SHRI A. G. KULKARNI: This is like the Gita. The Gita says everything. But how it is followed, that is very important.

SHRl D. L. BAITHA: As the honourable Member has pointed out, there were some difficulties of transport and we havo instructed the Delhi Administration that this problem should be solved as quickly as possible,

SHRI A. G. KULKARNI: Sir, is this reply adequate? ... *(.Interruptions)*... Sir, Is this reply adequate to the poor consumer? Is this reply adequate and satisfactory?

MR. CHAIRMAN: He says that they are trying their best.

SHRl A. G. KULKARNI: You are also protecting him.

MR. CHAIRMAN: Yes, Mr. Chaturan_ an Mishra.

SHRI A. G. KULKARNI: The Chairman should come to the help of the people.

MR. CHAIRMAN: What can I do? I cannot take it on my head.

SHRI A. G. KULKARNI: I do not expect that. But at least if your direction goes to the Minister, Mr. Bhajan Lal may run and he will have to run to do this . . . *(Interruptions)*. . . वो मिनिस्टर है

THE MINISTER OF STEEL AND MINES (SHRI M. L. FOTEDAR): Mr. Bhajan Lal is not the Minister in that Ministry.

श्री सभापति : आपको यह भी नहीं मालूम।

श्री अरविन्द गणेश कुलकर्णी : एग्री-कल्चर में नहीं है क्या वो।

SHRI M. L. FOTEDAR: He only produces.

श्री भजन लाल : आप दोबारा पूछ लें। (व्यवधान)

श्री सत पाल मित्तल : लेकिन उनको तो भजन लाल फोबिया है न।

श्री भजन लाल : अगर इजाजत देंगे तो मैं बता दूंगा।

श्री चतुरानन मिश्र : सभापति जी, मेरा इससे संबंधित प्रश्न यह है कि दिल्ली में गरीब तबकों खास कर के मजदूर क्लास के ऐसे बहुत से लोग हैं, वेंडर्ज है, रिक्शा चालक और ठेला गाड़ी चलाने वाले लोग हैं इन लोगों को राशन कार्ड उपलब्ध नहीं है। क्या सरकार इस संबंध में कोई ऐसी व्यवस्था करेगी जिससे इन अत्याधिक गरीब लोगों को राशन कार्ड उपलब्ध हो सकें और उनको भी राशन की सुविधा मिल सके।

श्री डी० एल० बैठा : सभापति जी, अभी वर्तमान समय में 19,72,000 के करीब फूड राशन कार्ड इश्यू किये हुये हैं। जहां तक आपने गरीबों की बात कही है झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले लोगों को भी हम लोग टेम्पोरेरी राशन कार्ड इश्यू करते हैं कि इस बीच में अगर कोई स्थाई व्यवस्था हो जाय तो स्थाई रूप से कार्ड इश्यू कर देते हैं। कोशिश यह भी की जाती है कि गरीबों के लिये कार्ड बनाने के लिये विशेष इन्तजाम किये जायें।

श्री चतुरानन मिश्र : मैंने यह पूछा है कि क्या इसके लिये स्पेशल ड्राइव चलायेंगे ताकि उनको राशन मिल सके क्योंकि यह सब से गरीब तबका है। धनी लोगों को तथा जिनके मकान हैं उनको तो आप दे ही रहे हैं। हमने यह कहा कि जिनके पास कोई स्थान नहीं है जो झुग्गी झोपड़ी में रह रहे हैं उनके लिये क्या कोई स्पेशल ड्राइव करेंगे। यह मैंने पूछा है।

श्री डी० एल० बैठा : जिनके पास कोई राशन कार्ड नहीं रहता है वह सर्कल आफिस में आते हैं वहां पर उनका राशन कार्ड बन जाता है। जहां तक स्पेशल ड्राइव करने की बात है हम समझते हैं कि इसके लिये तो हम देखेंगे कि क्या हो सकता है।

श्री चतुरानन मिश्र : क्या हो सकता है, यह नहीं; आप क्या करेंगे यह बतावें ?

श्री सभापति : प्रयास करेंगे, यह कह रहे हैं।

Report of the Committee on Regularisation of Unauthorised Colonies of Delhi

*303. SHRI LAL K. ADVANI:t SHRI ASHWANI KUMAR:

Will the Minister of URBAN DEVELOPMENT be pleased to state:

hether a Committee under th« Chairmanship of the Secretary Land and Building Department of the Delhi Administration was constituted to look in the possibility of regularisation of the left-out unauthorised colonies of Delhi;

f so, the main features of its report and its recommendations; and

the follow-up action taken jn each of the recommendations so far?

THE MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT (SHRIMATI MOHSINA KIDWAI): (a) to (c). A Committee of officers appointed by the Lt. Governor of Delhi has submitted its report in August, 1988. Its recommendations are presently under consideration of the Delhi Administration.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अब इस पर क्या सवाल पूछें ? सभापति जी यह बहुत गम्भीर समस्या हैं। दिल्ली की आबादी जो 1957 में लगभग 20 लाख थी वह आज 80 लाख से अधिक हो गई है। चार गुना से अधिक बढ़ गई है और प्रति-वर्ष लगभग ढाई लाख की आबादी

† The question was actually asked on the floor of the HouseT)y Shri Lal K. Advani.